भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 **दिसम्बर** 2005 **अंक** 12

किताबें मेरी दूसरी जिन्दगी

—निर्मल वर्मा

किताबें मेरी 'दूसरी जिन्दगी' रही हैं, मेरी अपनी जिन्दगी के समानांतर चलती हुई। किसी अच्छी कहानी या उपन्यास पढ़ने के बाद मुझे बाहर की दुनिया कुछ वैसी ही दिखाई देती थी जैसे बहुत बारिश होने के बाद बादल छँटते ही शिमला के पहाड़ दिखाई देते थे। बाद में मैंने पाया कि किताबें मन का शोक, दिल का डर या अभाव की हूक कम नहीं करती, सिर्फ सबकी आँख बचाकर चुपके से दुखते सिर के नीचे सिरहाना रख देती हैं। कुछ पुस्तकों के साथ कैसे कुछ शहर याद रह जाते हैं... शिमला जाते हुए जब अम्बाले का स्टेशन बीच में आता है तब मुझे अपने बाबा की बीमारी के अन्तिम दिन याद आते हैं। मैं माँ के साथ उनके घर कुछ दिन रहने गया था। वह भीतर के कमरे में माँ से अपनी व्यथा-गाथा कहते थे और मैं बाहर बरामदे में बैठा नेहरूजी की पुस्तक 'विश्व इतिहास की झलकें' पढ़ा करता था, जो उन्होंने नैनी जेल से पत्रों के रूप में अपनी बेटी इंदिरा को लिखे थे। अम्बाला की लम्बी दुपहरों में मैंने कितने सुदूर देशों की यात्रा कर डाली थी। आज भी जब कभी बनारस या कलकत्ता जाते हुए मुगलसराय का स्टेशन आता है तो मुझे हर बार शरत् बाबू का उपन्यास 'गृहदाह' याद हो आता है। जहाँ महिम की पत्नी को उसका मित्र सुरेश अपने साथ ले जाता है और अचला (शायद यही उसका नाम था) रेल के डिब्बे में बैठी अपने पति की प्रतीक्षा करती रहती है।

अचानक जीवन के किसी मोड़ पर कोई ऐसी पुस्तक हाथ लग जाती है जिसे हमने जान-बूझकर नहीं चुना किन्तु जिसे जैसे स्वयं मालूम हो कि हमारी आत्मा किस तृष्णा की आग में उसके लिए झुलस रही है, और वह खुद चलकर हमारे हाथ में चली आती है और हमें लगता है कि हम अभी तक इसी की प्रतीक्षा तो कर रहे थे। अज्ञेय के 'शेखर' को पढ़ना कुछ ऐसा ही अनुभव था। अपनी हिन्दी में भी ऐसी पुस्तक लिखी जा सकती हैं, यह एक चमत्कार-सा जान पड़ा था। महीनों तक उसकी भाषा और शैली का नशा मेरे मन पर छाया रहा...। अच्छी कहानियाँ प्रेमचंद, सुदर्शन, जैनेन्द्र की पहले भी पढ़ी थी किन्तु 'शेखर' का प्रभाव उसके

शेष पृष्ठ 11 पर

विश्वविद्यालय-महाविद्यालय राजनीति के रणक्षेत्र

राजस्थान सरकार ने राजस्थान उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार प्रदेश के दस विश्वविद्यालयों को छात्र संघों तथा कर्मचारी संघों के चुनाव पर रोक लगाने का आदेश जारी किया है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय जिसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हो गया है, वहाँ के अध्यापकों को राजनीति से दूर रहने का आदेश दिया गया है।

आज देश के विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के छात्र-संघ, कर्मचारी संघ, अध्यापक संघ सक्रिय राजनीति के केन्द्र बन गये हैं। सत्र के 6-7 महीने संघ चुनाव की राजनीति में बीत जाते हैं। मारपीट, हत्या, आतंक, प्रदर्शन से सारा परिसर यहाँ तक कि नगर प्रभावित होता है। ये चुनाव विधानसभा और संसद के चुनाव को भी मात कर देते हैं। चुनाव के किसी नियमों/प्रतिबन्धों को नहीं स्वीकारते। परिणाम होता है कि अध्ययन-अध्यापन बुरी तरह प्रभावित होता है। राजनीतिक पार्टियाँ इन चुनावों को परोक्ष रूप से संचालित करती हैं ताकि उन्हें अपनी पार्टी के लिए युवा कार्यकर्ता मिलें।

पिछले दिनों लखनऊ विश्वविद्यालय चुनाव में भीषण उपद्रव हुए, गोली चली। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हाल में सम्पन्न हुए चुनाव में महामंत्री पद के प्रत्याशी की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

कुछ वर्षों से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव पर रोक लगी है, जिससे विश्वविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन के वातावरण में सुधार आया है। विश्वविद्यालय क्षेत्र में शान्ति व्याप्त है। यद्यपि आये दिन पेशेवर नेता छात्र यूनियन के लिए प्रदर्शन करते रहते हैं।

विश्वविद्यालयों से संबद्ध महाविद्यालयों की स्थिति और भी चिन्तनीय है। वहाँ महाविद्यालय के प्रबन्धकों को छात्रसंघ चुनाव के नाम पर भयावह संघर्ष का सामना करना पड़ता है। जुलाई से सत्र शुरू हुआ, चुनाव प्रक्रिया जनवरी तक चलती है। अध्ययन-अध्यापन, परीक्षा सभी पर बुरा असर पड़ता है। उत्तर प्रदेश में जिस पार्टी ने छात्र-यूनियन के चुनाव पर रोक लगाई, दूसरी पार्टी ने उसी के विरोधस्वरूप युवकों को उभारकर चुनाव में उस पार्टी को पराजित कराया। इस प्रकार राजनीति के लिए युवकों का दुरुपयोग क्या उचित है।

छात्र-संघों के संविधान को क्या रचनात्मक नहीं बनाया जा सकता? उसे बौद्धिक स्वरूप नहीं दिया जा सकता। एक समय था जब विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में 'मॉक पार्लियामेंट' 'नकली संसद' का आयोजन होता था, छात्र अपनी समस्याओं पर बौद्धिक बहस करते हुए नियम कायदों को भी समझते थे।

आज आवश्यकता है राष्ट्रहित में बौद्धिक स्रोत की इन शिक्षण संस्थाओं को रचनात्मक बनाये, छात्र आन्दोलन के रणक्षेत्र नहीं। युवकों की ऊर्जा को सही दिशा की ओर ले जायँ। आज देश के न्यायालय को आये दिन की उच्छृंखलता को नियन्त्रित करने का आदेश देना पड़ता है, यह चिन्ता का विषय है।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

यत्र-तत्र-सर्वत्र

राजनीति या अध्यापन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय को केन्द्रीय दर्जा मिलने के बाद राजनीति करनेवाले शिक्षकों का राजनीतिक भविष्य संकट में फँस गया है। इन शिक्षकों को नेतागिरी या अध्यापन में एक चुनना होगा। नये अधिनियम में इस बात को विशेष रूप से रखे जाने की सम्भावना है।

विश्वविद्यालय के दो दर्जन शिक्षक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से राजनीतिक दलों से जुड़े हुए हैं।

देश में जितने केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं वहाँ शिक्षकों के सक्रिय राजनीति पर रोक है।

हाईटेक यूथ रिसोर्स सेण्टर

देश के 254 जनपदों में अत्याधुनिक तकनीक व पुस्तकालय से सुसज्जित यूथ रिसोर्स सेण्टर (युवा संसाधन केन्द्र) बनेगा। बशर्ते जिला प्रशासन इसके लिए जमीन उपलब्ध कराये।

यूथ रिसोर्स सेण्टर का एक प्रमुख हिस्सा पुस्तकालय होगा। इसमें राजा राममोहन राय मूवमेण्ट के जरिये किताबें उपलब्ध करायी जायेगी। यूथ सेण्टर में इण्टरनेट की सुविधा के साथ कम्प्यूटर उपलब्ध होगा। इसी स्थान पर युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण व उनके कैरियर से सम्बन्धित सारी जानकारी सुलभ करायी जायेगी। इस भवन में नेहरू युवा केन्द्र का कार्यालय भी होगा। इसके अलावा गाँव-गाँव के लिए सचल पुस्तकालय की भी सुविधा होगी। यूथ सेण्टर का मकसद युवा शक्ति को रचनात्मक गतिविधि से जोड़कर कैरियर के प्रति सचेत करना और सही दिशा प्रदान करना है। लक्ष्य ग्रामीण भारत को 21वीं सदी की चुनौतियों के मुकाबले के लिए तैयार करना है।

माइक्रोसॉफ्ट और ब्रिटिश लाइब्रेरी

सूचना तकनीक क्षेत्र की दुनिया की सबसे बड़ी कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट और ब्रिटिश लाइब्रेरी 2006 के ब्रिटिश पुस्तकालय की किताबों के 2.5 करोड़ पन्नों का डिजीटलीकरण के लिए एक दूसरे से हाथ मिलाया। माइक्रोसॉफ्ट और ब्रिटिश पुस्तकालय मिलकर कॉपीराइट के अन्तर्गत नहीं आने वाली एक लाख के लगभग किताबों का डिजीटलीकरण करेंगे। डिजीटलीकरण के बाद नई एमएसएन बुक सर्च सेवा के जरिए इन किताबों को शोधकर्ताओं के समक्ष रखा जाएगा। माइक्रोसॉफ्ट और ब्रिटिश पुस्तकालय की इस मिली-जुली कोशिश से लोगों को वेबसाइट पर किताबों को खोजने में सहूलियत होगी। वे उन्हीं किताबों को खोज पायेंगे, जिनकी उन्हें जरूरत है। पुस्तकालय द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार ब्रिटिश पुस्तकालय के कार्यकारी प्रमुख के अनुसार माइक्रोसॉफ्ट के साथ साझेदारी से अपने विजन को पूरा कर पाने में मदद मिलेगी और हर ऐसे व्यक्ति जो इस सन्दर्भ में खोज करना चाहते हैं, के लिए अपना संग्रह उपस्थित कर पाएँगे।

संस्कृत शास्त्रीय भाषा

केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने संस्कृत को शास्त्रीय भाषा घोषित करने का निर्णय लिया है। अभी तक तमिल को शास्त्रीय भाषा की मान्यता प्राप्त है। संस्कृत में शोध के लिए विश्वविद्यालयों को अतिरिक्त राशि दी जायगी। केन्द्रीय मंत्री और मंत्रिमण्डल के प्रवक्ता एस० जयपाल रेड्डी के कथनानुसार अभी तक दो हजार वर्ष प्राचीन भाषा को शास्त्रीय भाषा की मान्यता दी जाती थी। अब इस नियम को शिथिल कर 1500 वर्ष पुरानी भाषा को भी शास्त्रीय भाषा की मान्यता दी जायगी। इसी सन्दर्भ में कन्नड़ और तेलुगु को भी शास्त्रीय भाषा की मान्यता देने पर सरकार विचार कर रही है।

इतिहास नहीं क्रिकेट पढ़िए

एन०सी०ई०आर०टी० ने आगामी सत्र से पढ़ाने के लिए इतिहास की नई पुस्तक तैयार कर रही है जिसमें 'खेलकूद और राजनीति' के अन्तर्गत 'क्रिकेट की कहानी' पढ़ाई जायगी। इतना ही नहीं सानिया मिर्जा को महिमामण्डित करने के लिए टेनिस की प्रगति भी बतायी जायगी।

कहा गया कि देश और राष्ट्र अपने इतिहास तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह और भी बहुत कुछ है।

ठीक भी है राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता के तथ्य से विरत करने के लिए क्रिकेट के मैदान में उतरिये और चौके-छक्के लगवाइये। यही वास्तविक इतिहास है। अतीत अन्धकार है, व्यतीत हो गया, वर्तमान को प्रकाशित करें क्रिकेट के मैदान में।

सर्वधर्म समभाव

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संघटक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय की भाषा प्रयोगशाला द्वारा गठित 'फोरम' की मासिक संगोष्ठी में महात्मा गाँधी के लेख 'सर्वधर्म समभाव' पर व्यापक विचार-विमर्श हुआ तथा पुस्तक चर्चा हुई।

गाँधीजी ने लिखा है कि अहिंसा हमें दूसरे धर्मों के लिए समभाव, बराबरी का भाव सिखाती है, फिर वे सभी धर्मों की एकता को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि धर्म का मूल एक है जैसे पेड़ एक है, लेकिन उसके पत्ते अनगिनत हैं। चर्चा का प्रारम्भ करते हुए नाथद्वारा के पूर्व प्राचार्य डॉ० सदाशिव श्रोत्रिय ने कहा कि गाँधी हमारे लिए एक बहुत बड़ी नैतिक उपस्थिति हैं वहीं गाँधी द्वारा सत्य को परमेश्वर मानने की भावना हमें उदात्त बनाती है। स्वैच्छिक संगठन कार्यकर्ता किशोर संत ने धर्म में नैतिकता को गाँधीजी के विचारों का व्यापक महत्त्व की विषयवस्तु बताया। प्रो० एस०एन० जोशी ने कहा स्वतंत्रता और विभाजन के दिनों में महात्मा गाँधी ने बहुसंख्यक हिन्दुओं को साम्प्रदायिक होने से बचाया। प्रो० नवल किशोर ने कहा सर्वधर्म समभाव लेख की भाषा पर असाधारण अधिकार का सुन्दर उदाहरण यहाँ मिलता है। हिमांशु पण्ड्या ने कहा कि धर्म को सार्वजनिक वृत्त से बाहर रखकर ही उसके महत्त्व का लाभ लिया जा सकता है, वहीं समाजशास्त्र शोधार्थी प्रज्ञा जोशी ने कहा कि विकल्प चुन लेने के बाद धर्मों में समभाव हो ही नहीं सकता।

भाषा प्रयोगशाला के निदेशक एवं अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ० आशुतोष मोहन ने फोरम की गतिविधियों का उल्लेख किया तथा प्रतिभागियों का परिचय दिया।

पढ़ो और आगे बढ़ो

केरल में सरकारी और सरकारी अनुदान से पोषित स्कूलों को 'पढ़ो और आगे बढ़ो' योजना के अन्तर्गत प्रत्येक स्कूल को आधुनिक साधनों से सम्पन्न किया जायगा। स्कूल के टाइम टेबुल में एक पीरियड पुस्तकालय का होगा। जनवरी 2006 में प्रथम चरण में 2393 हाईस्कूल और 2827 प्राइमरी स्कूल को पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की जायगी।

केरल के शिक्षामंत्री ने बताया कि शिक्षा विभाग स्कूलों को सुनियोजित पुस्तकालय के सुविधा के लिए भवन निर्माण हेतु नक्शे उपलब्ध करायेगा। स्कूल, पंचायत, ब्लाक तथा जिला स्तर पर लोकप्रिय समितियाँ संगठित की जायँगी जो इस योजना को कार्यान्वित करने में सहभागी बनें। केरल देश का सर्वाधिक साक्षर प्रदेश है, इसका कारण केरल सरकार की पुस्तक निष्ठा तथा दूरदर्शिता है।

उत्तर प्रदेश में
हिन्दी पत्रकारिता शोध-परियोजना

हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य के शलाका पुरुष पं० माखनलाल चतुर्वेदी के नाम पर स्थापित विश्वविद्यालय वस्तुतः एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिसकी बहुआयामी गतिविधियों से विश्व-पत्रकारिता गौरवान्वित है। भोपाल स्थित राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के वर्तमान महानिदेशक प्रो० अच्युतानन्द मिश्र के सक्षम नेतृत्व में स्वतंत्र भारत की पत्रकारिता पर सार्थक शोध के निमित्त अभिनव सारस्वत अनुष्ठान सम्पादित हो रहा है। शोध प्रकल्प की गौरवमयी शृंखला में ही विगत दिनों 'उत्तर प्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता' परियोजना का शुभारम्भ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने लखनऊ में किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री यादव ने कहा कि पाश्चात्य सभ्यता और अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रचलन के बीच हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति को सुस्थापित करने का दायित्व मीडिया का है।

आज हिन्दी मात्र अनुवाद की भाषा बनती जा रही है। संसद और सुप्रीम कोर्ट में अंग्रेजी की प्रबलता चिन्तनीय है। इसी प्रकार की चिन्ता प्रकट करते हुए समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री बाबूलाल गौर ने कहा कि आज बुद्धिजीवी भी विदेशों की ओर दौड़ लगा रहे हैं जो समाज अपनी भाषा, वेशभूषा और संस्कृति को भुला देता है, वह ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रह पाता। श्री गौर ने कहा कि आज जब विदेशों में भारतीय भाषाओं दावत, शुक्रिया जैसे नामों से होटल खुल रहे हैं, तो देश में हिन्दी स्थापित क्यों नहीं हो पायी, इस पर विचार करना होगा। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में आउटलुक पत्रिका के सम्पादक आलोक मेहता ने कहा कि हमें आलोचनाओं से आत्मशोधन करना चाहिए। पत्रकारिता के आदर्शों के प्रति चिन्ता ने शोध कार्यों का महत्त्व व अनिवार्यता बढ़ा दी है। श्री मेहता ने कहा कि आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने प्रिण्ट मीडिया से जुड़े पत्रकारों की भूमिका को और अधिक मुखर और उत्तरदायी बना दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार और पत्रकार को पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं होना चाहिये। समारोह को परियोजना के महानिदेशक डॉ० अच्युतानंद मिश्र, लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति आर०पी० सिंह, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति सुरेन्द्र सिंह तथा परियोजना निदेशक श्रीधर ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर डॉ० अर्जुन तिवारी कृत **'उत्तर प्रदेश पत्रकारिता का परिचयात्मक विवरण'** तथा **'सम्पूर्ण पत्रकारिता'** का विमोचन श्री यादव व श्री गौर ने संयुक्त रूप से

'सम्पूर्ण पत्रकारिता' का लोकार्पण करते हुए मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव, साथ में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर

किया। कार्यक्रम के अन्त में दोनों ही मुख्यमंत्रियों ने गन्ना संस्थान सभागार में आयोजित उत्तर प्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता तथा विश्वविद्यालय की पत्रकारिता शोध परियोजना की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

उद्घाटन समारोह के उपरान्त उत्तर प्रदेश मार्गदर्शक मण्डल की बैठक में महानिदेशक प्रो० मिश्र ने स्वतंत्र भारत की पत्रकारिता की ऐतिहासिक परियोजना के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बहुआयामी शोध, इतिहास-लेखन के मौलिक स्वरूप को उद्घाटित किया। 1947 से 2005 तक के कालखण्ड को दशकों में बाँटकर प्रमुख घटनाओं पर पत्रकारिता लेखन के विश्लेषण पर बल देने के साथ महानिदेशक ने विज्ञान, ग्रामीण विकास, खेल साहित्य, संस्कृति, महिला सहभागिता पर पृथक रूप से गम्भीर अध्ययन को सम्पन्न करने की योजना के कार्यान्वयन में सभी के सहयोग की अपेक्षा की।

प्रमाणपत्रों में पिता के साथ माँ का नाम

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने केन्द्रीय तथा राज्य सरकार के सभी विभागों से अनुरोध किया है कि सभी सर्टिफिकेट तथा सरकारी दस्तावेजों में पिता के साथ माँ का नाम भी शामिल किया जाय।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

विदेश मंत्रालय (भारत सरकार) ने विश्व हिन्दी सम्मेलन फालोअप समिति केन्द्रीय विदेश राज्यमंत्री की अध्यक्षता में गठित की है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को अधिकारिक भाषा बनाना, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठों की स्थापना, भारतीय मूल के लोगों में हिन्दी के प्रयोग व हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार, इसके प्रचार हेतु वेबसाइट की व्यवस्था, दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग की स्थापना व सूरीनाम में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था आदि समिति की प्राथमिकता है।

आईएएस परीक्षा रैदास बने रायदास

खड़ी हिन्दी के प्रणेता बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने दो सदी पूर्व राष्ट्रभाषा की दुर्दशा पर आँसू बहाए थे लेकिन आजाद भारत में प्रशासनिक व्यवस्था की बागडोर थामने के तत्पर लोगों को आईएएस परीक्षा के दौरान हिन्दी में लिखे सवालों को समझने में पूरी प्रतिभा लगा देनी पड़ी लेकिन 'संत रायदास' को वे नहीं पहचान सके।

दरअसल भक्ति शाखा के प्रख्यात कवि संत रैदास का हिन्दी अनुवाद प्रशासनिक सेवा (मुख्य परीक्षा) के सामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्र में 'रायदास' किया गया। इतना ही नहीं कई अन्य अंग्रेजी शब्दों का जिस तरह अनुवाद किया गया उससे विषय की अच्छी समझ रखने वाला व्यक्ति भी चक्कर खा जाए। प्रथम प्रश्नपत्र में ही 'डिजास्टर मैनेजमेंट' के लिए 'विपत्ति प्रबन्धन' शब्द का इस्तेमाल किया गया जबकि आपदा प्रबन्धन से हर कोई परिचित है। और तो और 'बैन आन बार डांसिंग' शब्द का अनुवाद 'मधुशाला नृत्य' पर पाबन्दी के रूप में किया गया।

अंग्रेजी प्रकाशक पेग्युन हिन्दी की ओर

अंग्रेजी पुस्तकों विशेषकर पेपरबैक पुस्तकों के प्रमुख प्रकाशक पेग्युन जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासनकाल में अपनी सस्ती अच्छी विभिन्न विषयों की अंग्रेजी पुस्तकों के लिए भारतीय पाठकों में लोकप्रियता प्राप्त की थी, विगत अनेक वर्षों से भारत में भारतीय सन्दर्भों में अंग्रेजी की पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं। इधर हिन्दी पाठकों की विशाल संख्या और हिन्दी की लोकप्रियता को देखते हुए हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं। छः महीने में पन्द्रह उपन्यास हिन्दी में प्रकाशित किये हैं। पेग्युन पुस्तकों के प्रकाशक रवि सिंह का कहना है कि हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन में लाभांश कम है (हिन्दी में अंग्रेजी पुस्तकों की अपेक्षा मूल्य कम रखना होता है।) किन्तु हिन्दी पुस्तकों का बाजार बहुत बड़ा है।

इंटरनेट पर शोधपरक पुस्तकालय

इंटरनेट के क्षेत्र में गूगल (Google) प्रमुख व्यक्तित्व है जो विश्व के पाँच प्रमुख शोधपरक पुस्तकालयों के ग्रन्थों को स्कैन (उनकी एलेक्ट्रॉनिक प्रतिलिपि) कर इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहे हैं। अमेरिकी प्रकाशक संघ ने गूगल के विरुद्ध कापीराइट अतिक्रमण के इस प्रयास के लिए न्यायालय में वाद प्रस्तुत किया है।

बहुत शीघ्र अनेक प्राचीन अनुपलब्ध ग्रन्थ, पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि इंटरनेट पर अल्पराशि भुगतान कर अथवा निःशुल्क प्राप्त होने लगेगी, इससे शोध के क्षेत्र में क्रान्तिकारी उपलब्धि होगी। डिजिटल कॉर्ड कैटलॉग के सहारे लोग अपनी मनचाही किताब खोज सकते हैं, किताब से जुड़े विवरण देख सकते हैं, किताब की विषय सूची देख सकते हैं, उसका मनचाहा हिस्सा देख सकते हैं, लेकिन पूरी किताब नहीं देख सकते। हाँ वह किताब कहाँ मिलेगी, इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

गूगल की ऑन लाइन लाइब्रेरी को लेकर दुनियाभर के पाठकों में बहुत उत्साह है कि कई ऐसी किताबें और उनके दुर्लभ पन्ने नजर आने वाले हैं, जो पहले सबकी पहुँच से बाहर थे।

शोध की गुणवत्ता सुधारें

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल और कुलाधिपति **श्री टी०वी० राजेश्वर** ने विश्वविद्यालयों में शोध के गिरते स्तर पर चिन्ता व्यक्त की है। सभी विश्वविद्यालयों को भेजे निर्देश में उन्होंने शोध की गुणवत्ता सुधारने का निर्देश दिया है। उन्होंने इस बात पर आपत्ति जताई है कि नियमों और

परिनियमों पर ध्यान दिए बगैर शोध उपाधियाँ प्रदान की जा रही हैं।

विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध उपाधियाँ सरसरी तौर पर प्रदान की जाती है। ऐसे शोध प्रकाशन में गुणवत्ता का अभाव है। एक ही विषय पर कई बार शोध कराया जा रहा है। जिस विषय में शोध एक विश्वविद्यालय में हो रहा है, उसी विषय पर दूसरे विश्वविद्यालय में शोध चलता जा रहा है। शोध उपाधियों के मूल्यांकन में निश्चित प्रक्रिया का पालन नहीं किया जा रहा है।

सभी विश्वविद्यालय इस बात का ध्यान रखें कि गुणवत्तापरक शोध को ही बढ़ावा मिले। शोध के विषयों का दोहराव न हो, इसके लिए प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने वेबसाइट पर शोध का विषय और पंजीकरण संख्या प्रकाशित करें। इससे अन्य विश्वविद्यालय को यह जानने में मदद मिले कि दूसरे विश्वविद्यालयों में किस विषय पर शोध हो रहा है। शोधों के पंजीकरण और उपाधियों के वितरण में अध्यादेश में वर्णित नियमों का कठोरता से पालन किया जाय। शोध की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए उसके मूल्यांकन में कठोरता बरती जाय।

आदि ग्रन्थ चतुःशती समारोह

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अन्तर्गत 26-27 सितम्बर 2005 को 'गुरुग्रन्थ साहिब की शिक्षा : भगत कबीर के सन्दर्भ में' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। उद्घाटन डॉ० नामवर सिंह ने तथा अध्यक्षता प्रो० राममूर्ति त्रिपाठी ने की।

डॉ० नामवर सिंह ने कहा—कबीर वह अनल पाखी थे जिसके गाते ही शरीर से आग निकल कर उसे भस्म कर देती है और फिर वर्षा होने पर वह अपनी ही राख से जी उठता है।

कुलपति प्रो० पंजाब सिंह ने कहा—गुरुग्रन्थ भारत की समन्वय चेतना का स्मारक है। विद्वानों को गुरुग्रन्थ साहब की उसी पंथ निरपेक्ष और सर्वधर्म समभाव वाली समन्वय चेतना को निखारना और लोगों तक ले जाना चाहिए, जिसका वह संवाहक है।

संगोष्ठी में प्रो० शुकदेव सिंह, डॉ० मोहिन्दर सिंह, डॉ० सुखविंदर कौर, डॉ० उदयप्रताप सिंह, डॉ० सुमन जैन, डॉ० बृजबाला सिंह, प्रो० सुधाकर सिंह, प्रो० शिवकुमार मिश्र, प्रो० पूर्णमासी राय, प्रो० रामनारायण शुक्ल, डॉ० मनोजकुमार सिंह, डॉ० संजय राय, प्रो० प्रमोदकुमार सिंह, प्रो० चन्द्रकला त्रिपाठी, डॉ० सदानन्द शाही, डॉ० नीलिमा शाह, डॉ० राधेश्याम सिंह, डॉ० पंकज पराशर, डॉ० मधुप कुमार, डॉ० आनन्द पाण्डेय, डॉ० शशिकला त्रिपाठी, प्रो० विजेन्द्रनारायण सिंह, प्रो० रामकली सराफ, प्रो० रंगनाथ पाठक, प्रो० सुदर्शनलाल जैन, राधेश्याम दूबे ने सक्रिय भाग लिया।

विभागाध्यक्ष प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने संगोष्ठी की सफलता के लिए मालवीयजी की अहेतुकी कृपा का स्मरण करते हुए सबके प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

गोष्ठियों के प्रभावशाली संचालन में प्रो० अवधेश प्रधान, प्रो० श्रीनिवास पाण्डेय, डॉ० मंगला तिवारी, प्रो० बलिराज पाण्डेय का विशेष योगदान था। समापन समारोह की अध्यक्षता रेक्टर प्रो० श्रीकान्त लेले ने की।

फिर आयेंगे इन डालन में फूल

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से 1969 में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अवकाश ग्रहण किया। उनका अवकाश ग्रहण करना था कि विभाग को ही ग्रहण लग गया। प्रतिभाएँ कुंठित होने लगीं और अप्रतिभाओं का बाहुल्य होने लगा। धीरे-धीरे विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग हाशिए पर चला गया—सर्वथा अचर्चित। इतने वर्षों में विभाग में कितने पद रिक्त हुए, कितने तरक्की पाकर रीडर और प्रोफेसर हो गये, इससे वे सन्तुष्ट भी हो गये।

सुसमाचार है कि इतने वर्षों बाद विश्वविद्यालय में नये रक्त का संचार हो रहा है। एक कुनबे से नहीं विभिन्न विश्वविद्यालयों के ग्यारह प्रतिभावान प्राध्यापकों की हिन्दी विभाग में नियुक्ति हुई है—श्रीप्रकाश शुक्ल, विनोद तिवारी, विनयकुमार सिंह, प्रभाकर सिंह, विपिनकुमार (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), सत्यपाल शर्मा, रामाज्ञा राय (जे०एन०यू०), नीरज खरे (सागर), आशीष त्रिपाठी (रीवां), मनोज सिंह (बी०एच०यू), आभा गुप्ता (दिल्ली)। अभी दो प्रोफेसर और छः रीडर की नियुक्ति होनी शेष है।

विश्वविद्यालय के नये कुलपति प्रो० पंजाब सिंह को इसका श्रेय है कि विश्वविद्यालय की सुप्त पड़ी धमनियों में नये रक्त का संचार कर रहे हैं। वे कृषि विज्ञानी हैं, वे जानते हैं बिना पलटाई और सिंचाई के फसलें नहीं होतीं। इन नव नियुक्तियों से निश्चय ही इन डालन में फूल आयेंगे—अशोक के फूल खिलेंगे, आलोक पर्व आयेगा, साहित्य सहचर मिलेंगे, पुरानी कहानी याद आयेगी, पुर्ननवा प्रगट होंगे।

बीएचयू हिन्दी विभाग की लाइब्रेरी दीमकों का भोजन बन रही है

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की लाइब्रेरी बीते तीन वर्षों से बन्द पड़ी है और कमरों में बन्द दस हजार साहित्यिक पुस्तकें, मुंशी प्रेमचंद समेत तमाम साहित्यकारों पर हुए शोध अध्ययन व सन्दर्भ ग्रन्थ दीमकों का भोजन बनने को छोड़ दिए गए हैं। विश्व साहित्य के अपने शहर वाराणसी में हुए प्रेमचंद साहित्य संबंधी शोध-अध्ययन का अवलोकन करने को बीएचयू के विद्यार्थी और शोधार्थी तरस रहे हैं।

पचासों साल के शोध प्रबन्ध इसी लाइब्रेरी में बन्द पड़े हैं और शोधार्थियों को इनका लाभ नहीं मिल पाता। लाइब्रेरी में हिन्दी साहित्य के इतिहास, भाषा विज्ञान और पत्रकारिता सम्बन्धी कई पुस्तकें ऐसी हैं जो दुर्लभ हैं।

प्रेमचंद और 'गोदान'

प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के अवसर पर पूरे देश में विभिन्न समारोह आयोजित किये जा रहे हैं। इस क्रम में 6, 7, 8 नवम्बर 2005 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के स्वतंत्रता भवन में प्रेमचंद साहित्य संस्थान, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (नई दिल्ली), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान (आगरा) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'गोदान फिर से पढ़ते हुए' विषय पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए डॉ० नामवर सिंह ने कहा—''जिस प्रकार किसी मन्दिर में पूजा करने से पहले सफाई की जाती है उसी प्रकार प्रेमचंद के सम्बन्ध ऐतिहासिक सन्दर्भ से हटकर जो कुछ कहा गया है उसकी सफाई कर देना चाहता हूँ ताकि इस संगोष्ठी में सही तरीके से बहस को आगे बढ़ाया जा सके। उपन्यासकार जैनेन्द्र द्वारा 1954 में लिखे गये एक लेख 'यदि मैं गोदान लिखता' जो आकाशवाणी से प्रसारित हुआ था में जैनेन्द्र ने कहा था कि मैं 'गोदान' लिखता नहीं और लिखता तो दो सौ पन्नों से अधिक नहीं होता जबकि प्रेमचंद का 'गोदान' 600 पृष्ठों का है।'' लेख में यह भी कहा गया है कि 'गोदान' में पात्रों की संख्या अधिक है जिसे कम कर देता। प्रेमचंद के पात्र बक्कू हैं, अधिक बक बक करते हैं।

नामवर सिंह ने आगे कहा—'गोदान' के पात्र होरी, गोबर, धनिया, झुनिया आदि के चरित्र को प्रेमचंद ने विस्तार से उभारा है। प्रेमचंद का किसान औपनिवेशिक दौर का किसान है। प्रेमचंद के साहित्य में संयुक्त परिवार का टूटना बहुत बड़ी घटना है। अब माँ-बाप के साथ बेटे भी रहने को तैयार नहीं जिसे प्रेमचंद ने अपने युग में ही भाँप लिया था।''

गोष्ठी की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक चन्द्रबली सिंह ने की। इस अवसर पर इटली के प्रो० मारिओला आफरीदी वह अमेरिका के प्रो० किस्टोफर किंग को सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी में देश-विदेश से आये विशिष्ट विद्वानों ने भाग लिया जिनमें वेणु गोपाल (हैदराबाद), वीरेन्द्र यादव (लखनऊ), महेन्द्र प्रताप, अली अहमद फातमी (इलाहाबाद), डॉ० श्रीराम त्रिपाठी (अहमदाबाद), चन्द्रकला त्रिपाठी, कँवल भारती (रामपुर), प्रो० विजेन्द्रनारायण सिंह (पटना), डॉ० राजकुमार, डॉ० रमाकांत श्रीवास्तव, पी०एन० सिंह (गाजीपुर), कमलाप्रसाद (भोपाल), कृष्णमोहन (प्रतापगढ़),

डॉ० ब्रजेश श्रीवास्तव, असगर अली इंजीनियर, आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। डॉ० कुमार पंकज, डॉ० अवधेश प्रधान तथा डॉ० बलिराज पाण्डेय ने गोष्ठी का कुशल संचालन किया। संगोष्ठी के विशिष्ट आयोजन का श्रेय निदेशक डॉ० सदानंद शाही को है।

इस तृदिवसीय गोष्ठी में अनेक चेहरे दिखाई दिए किन्तु प्रेमचंद कहीं नहीं दिखे। लगता था प्रेमचंद की पूँछ पकड़कर काशी में 'गोदान' करने का श्रेय प्राप्त करना चाहते हैं। निमंत्रण पत्र में उल्लिखित अनेक प्रमुख साहित्यकारों, विद्वानों के न आने के कारण लगा प्रेमचंद का 'गोदान' अधूरा रह गया। फिर भी 'गोदान' 'गोदान' है, वैतरणी पार कराने के अनेक अवसर देगा। अभी प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती वर्ष के मास शेष हैं।

प्रेमचंद शोध केन्द्र

सूचना व प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री जयपाल रेड्डी के अनुसार प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में निम्नलिखित योजनाओं के कार्यान्वयन का निर्णय लिया गया है—

1. प्रेमचंद के जन्म स्थान लमही ग्राम में प्रेमचंद स्मृति शोध एवं शिक्षण संस्थान स्थापित किया जायगा। इसे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से जोड़ने की योजना है।
2. प्रेमचंद की समस्त रचनाओं का प्रकाशन हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी में भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा किया जायगा।
3. दूरदर्शन को निर्देश दिया जायगा कि वह प्रेमचंद की कहानियों पर सीरियल बनाए।
4. जामिया विश्वविद्यालय में प्रेमचंद पर शोध और शिक्षण के लिए एक अलग केन्द्र स्थापित किया जायगा। यहाँ प्रेमचंद से सम्बन्धित समस्त जानकारियों का भी संग्रह किया जायगा।

पूर्व में ऐसी कितनी योजनाएँ बनीं, उनका हश्र क्या हुआ। प्रत्येक 25 वर्ष पर प्रेमचंद को योजनाओं की स्मृतियों में पुनर्जीवित किया जाता रहा। किन्तु योजनाएँ आकार ग्रहण नहीं करतीं।

सोहनलाल द्विवेदी जन्मशती

'साहित्यानुशीलन समिति' चेन्नई में राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की जन्मशती के अवसर पर समिति-प्रमुख डॉ० इंदरराज बैद्य ने कविवर सोहनलाल द्विवेदी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला और उनके साहित्य पर प्रपत्र-वाचन के लिए अनुशीलकों का आह्वान किया।

अखिल भारतीय पत्रिका प्रदर्शनी आयोजित

औरैया (उत्तर प्रदेश) जनपद मुख्यालय पर श्री कैलाश त्रिपाठी द्वारा औरैया हिन्दी प्रोत्साहन निधि के वार्षिक समारोह में 6 नवम्बर 2005 को अखिल भारतीय पत्रिका प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में विभिन्न प्रान्तों से प्रकाशित अन्यान्य प्रकार की लगभग 250 पत्रिकाएँ प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी का उद्देश्य समाज में पत्रिकाओं के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना, पत्रिकाएँ पढ़ने हेतु जनसामान्य को प्रेरित करना तथा विभिन्न पत्रिकाओं की जानकारी जन-जन तक पहुँचाना है।

अमेरिका में गाँधी दर्शन

अमेरिका में पिछले कुछ वर्षों में करीब 50 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों ने गाँधीवाद पर पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट वर्जीनिया, यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई, जॉर्ज मेसन यूनिवर्सिटी के अलावा और भी कई विश्वविद्यालयों ने अपने यहाँ गाँधीवाद खासकर महात्मा गाँधी के अहिंसा और पड़ोसियों को अपनों की तरह व्यवहार करने के दर्शन पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। पश्चिमी देश विकास, प्रगति और आसक्ति की चरम स्तर पर पहुँचने के बाद अब सादगी की ओर लौटने की कोशिश कर रहे हैं। हावर्ड स्कूल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट ने गाँधी को 20वीं शताब्दी के 'मैनेजमेंट गुरू' के रूप में मान्यता दी है। गाँधीजी पश्चिम की देन हैं, जिनका बाद में रंगभेद करनेवाली पश्चिमी संस्कृति से मोहभंग हो गया था।

कथन

शब्द, भाषा, परम्परा

शब्दों की अपनी नैतिकता होती, जिस अनुपात से हम 'नैतिकता' के प्रति कम संवेदनशील होते जाते हैं, उतना ही अधिक हम भाषा के प्रति बलात्कार करते हैं।

भ्रष्ट भाषा में मूल्यवान अनुभव व्यक्त नहीं हो सकता।

परम्परा हमारे चिंतन, हमारी जीवन शैली हमारे कृत्यों की निरन्तरता का बोध मात्र है। प्रत्येक काल खण्ड में वह एक नये अनुभव से आगे बढ़ती है। वह शाश्वत है। वह अंत:सलिला की अन्तर्मन से निरन्तर प्रवाहित होती रहती है।

भाषायी भिन्नता के बावजूद धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में समपूर्ण भारतीयता अपनी सर्जनात्मक गरिमा के साथ मौजूद है। भक्ति आन्दोलन में पूरा भारत नरसी मेहता, कबीर, मीरा, सूर, जायसी, तुलसी होकर बोला। यह धार्मिक बोध हमारी सांस्कृतिक परम्परा की अनमोल निधि है।

—निर्मल वर्मा

भाषा और पापी पेट

हिन्दी की इतनी संस्थाएँ हैं, सम्मेलन हैं, सभाएँ हैं, संगठन हैं, वे साहित्यकारों पर बात करते हैं, उनकी कृतियों पर बात करते हैं, अच्छा है करें। यह भी जरूरी है। लेकिन क्या हिन्दी पढ़कर रोजगार कैसे मिले, इस पर सोचा? रोटी, पेट की भाषा कैसे बने, इस पर सोचा? सर जी। नहीं सोचा, न सोचना चाहते हैं। हिन्दी का उद्धार तभी होगा जब आप हिन्दी को पापी पेट से जोड़ दें।

—सुधीश पचौरी

तेजी से बढ़ रही शहर की संस्कृति से समाज का भला नहीं हो सकता। ग्रामीण भारत के केन्द्र में ईश्वर है। इसके चारों ओर प्रकृति है तथा बीच में मनुष्य है। **—प्रो० बैद्यनाथ सरस्वती**

साहित्य का सम्बन्ध हृदय से है उस रागात्मकता से है, जो विघटन का पटाक्षेप करता है तथा सबको समता, ममता तथा एकता के सूत्र में बाँधता है। बाद-सापेक्ष साहित्य सबके साथ न्याय नहीं कर सकता। इसलिए साहित्यकारों को किसी धारा विशेष के प्रति आग्रही नहीं होना चाहिए।

स्वतंत्र देश में अपनी अभिव्यक्ति आवश्यक है। आयातित विचार-सम्पदा दासता की सूचक है। सहृदय, रसिक तथा मानक शब्दों का सम्बन्ध हृदय से है। साधारणीकरण की क्षमता रखने वाला साहित्य ही साहित्य है। **—डॉ० शैलनाथ चतुर्वेदी**

सूचना का अधिकार

यह सूचना का अधिकार है, न कि सूचना की स्वतंत्रता। हमारी तरफ से यह कोशिश होगी कि पहले से देश में जो कानून बने हुए हैं, उनका पालन ठीक से किया जाए। सूचना या जानकारी लेना हर भारतवासी का हक है अत: उसके हित से जुड़े कानूनों का पालन करना पहली प्राथमिकता होगी। सूचना का अधिकार कानून देश के तमाम गोपनीयता कानूनों पर हावी रहेगा क्योंकि इस कानून को न सिर्फ आधुनिक रूप दिया गया है बल्कि जो अंतर्विरोध हैं उनका भी पूरा ख्याल रखा गया है। जिस तरह सरकार के पास जो भी सूचना होती है उसे संसद या विधानसभा के जरिये बताया जाता है ठीक उसी प्रकार लोगों को अन्य जानकारियाँ दी जाएँगी।

जनसेवा से जुड़े हर क्षेत्र में सूचना पाने का हक है। सम्बन्धित विभाग को निर्धारित अवधि में तमाम सूचना जारी करनी होगी। अगर किसी को सही जानकारी नहीं मिलती है तो वह सूचना आयोग से शिकायत कर सकता है। आयोग उसकी तहकीकात करेगा और यदि उसे महसूस होगा कि सम्बन्धित विभाग ने भ्रामक सूचना दी है या सूचना को छुपाकर रखा है तो उसे दण्डित किया जा सकता है।

दुनिया में जितने भी कानून हैं, उनका अध्ययन हो तो पायेंगे कि सूचना का अधिकार कानून सर्वाधिक प्रगतिशील व जनोपयोगी कानून है। विश्व के तमाम कानूनों का अध्ययन करने के बाद सूचना कानून बना है। कुछ राज्यों, जैसे महाराष्ट्र में सूचना आयोग अधिनियम बना था। अत: सबकी कमियों और खूबियों को ध्यान में रखकर कानून बनाया गया है। इस कानून को सफल बनाने के सारे तत्त्व इसमें मौजूद हैं। मगर सफलता हासिल करने के लिए इरादे मजबूत होने चाहिए।

—वजाहत हबीबुल्लाह
अध्यक्ष, सूचना आयोग

सम्मान-पुरस्कार

महाश्वेता देवी को इंदिरा गाँधी पुरस्कार

राष्ट्रीय एकता के प्रति उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रख्यात लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता महाश्वेता देवी को इंदिरा गाँधी की 21वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 20वें इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकीकरण पुरस्कार 2004 से सम्मानित किया गया। उन्हें पुरस्कार स्वरूप एक शाल, एक प्रशस्ति पत्र और डेढ़ लाख रुपये की नगद राशि भेंट की।

प्रतिभा सम्मान

शिव संकल्प साहित्य परिषद, होशंगाबाद ने श्री देवेन्द्रकुमार जैन की अध्यक्षता एवं श्री शंकर सक्सेना के मुख्य आतिथ्य में श्री सुरेश उपाध्याय **'व्यंग्य वैभव'**, श्री देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल *साहित्य सौरभ,* श्री शंकर सक्सेना राजनंदगाँव-*गीतश्री,* श्री ब्रजमोहन सिंह ठाकुर-बाबई *काव्य कौस्तुभ,* श्री हरेराम समीप, फरीदाबाद *साहित्यश्री,* श्री किरणप्रकाश गिरि भृगु, इटारसी *समाज गौरव,* श्री राम गिरि गोस्वामी खेड़ी साँवलीगढ़ (जिला बेतूल) *शोधश्री,* श्री सुरेन्द्र सिंह रघुवंशी पचामा (जिला रायसेन) *काव्य-सुमन,* श्रीमती आशा सक्सेना, भोपाल *लोक गीतश्री,* श्री अभय गौड़ 'निर्मोही' हरदा *काव्य प्रदीप,* श्रीमती निलम खरे, मण्डला *दोहाश्री,* श्री माखनलाल नागेश, केसला *काव्यदीप,* श्री कल्पना सरकार, होशंगाबाद *समाज सुरभि,* परिषद की मानद उपाधियों से अलंकृत किया।

हिन्दी सेवी सम्मान समारोह

मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के हिन्दी सेवी सम्मान समारोह में मध्यप्रदेश के राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड़ ने हिन्दीतर हिन्दी सेवी सम्मान से तेलुगु के श्री दसारि रामास्वामी सुबोध (भोपाल), बांगला के श्री सुमित सिन्हा (देवास), सिन्धी के श्री सुरेश आवतरमानी (भोपाल), पंजाबी के श्री नेमचंद जैन (भोपाल), उड़िया के श्री मृत्युंजय महापात्र (भोपाल), मलयालम के श्री वैलिया विट्टल उन्नीकृष्णन (ग्वालियर), मराठी के श्री नीलकंठ तुकाराम राणे (भेल, भोपाल) तथा तमिल की श्रीमती ज्योति मुदलियार (भोपाल) को सम्मानित किया। अम्बिकाप्रसाद वर्मा दिव्य पुरस्कार उज्जैन के मराठीभाषी युवा कवि डॉ० संदीप नाडकर्णी के काव्य संग्रह 'नेपथ्य के लोग' पर, सैयद मीर अली मीर पुरस्कार बैरागढ़ के सिन्धी भाषी वरिष्ठ कवि डॉ० रूपकुमार घायल को उनकी कविता पुस्तक 'क्रान्तिदूत' पर तथा हरिहर निवास द्विवेदी पुरस्कार सिंधीभाषी श्री खीमन मूलाणी को काव्य-पुस्तक 'सामी के श्लोक' पर प्रदान किया गया। इसके अलावा स्व० प्रकाश कुमारी हरकावत नारी लेखन पुरस्कार प्रख्यात लेखिका श्रीमती क्रांति त्रिवेदी को उनकी कृति 'नारी मन की कहानियाँ' पर तथा भोपाल की श्रीमती सुलभा माकोड़े को उनकी पुस्तक 'विज्ञान हमारे आस-पास' पर स्व० हजारीलाल जैन वाङ्मय पुस्तक पुरस्कार दिया गया।

समारोह में भोपाल के सरोजनी नायडू कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ० (श्रीमती) शशि राय वर्ष 2005 के प्रदेश का समाजसेवी सम्मान से, इन्दौर की वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता डॉ० (श्रीमती) जनक मगिलिगन, भोपाल की वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता डॉ० नुसरत बानो रूही और समाजसेवी डॉ० (श्रीमती) शशि किरण नायक को महिला सेवी सम्मान से अलंकृत किया गया। इसके अलावा वर्ष 2005 के रक्षा सिसोदिया शिक्षक पुरस्कार से भोपाल के सरोजनी नायडू कन्या उ०मा० विद्यालय की सहायक शिक्षिका श्रीमती गीता सिंह, स्व० श्री वल्लभ चौधरी शिक्षक सम्मान से भोपाल के ही सेन्ट जोसफ कान्वेन्ट सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल की व्याख्याता श्रीमती मंजु मेहता और रामायण-गार्गी मेधावी छात्र पुरस्कार से छात्रा कुमारी सुषमा टिलवानी राज्यपाल के हाथों पुरस्कृत हुईं।

समारोह में श्री शंकरशरण लाल बत्ता की पुस्तक 'अमर शहीद भगत सिंह' और श्री चन्द्र प्रकाश जायसवाल की पुस्तकें 'ब्रह्माण्ड के रहस्य' और 'विज्ञान के चमत्कार' का राज्यपाल द्वारा विमोचन भी हुआ। अन्त में समारोह के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र तिवारी ने हिन्दी के संवर्द्धन के लिये म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के कार्यों में अधिक से अधिक लोगों के जुड़ने का आग्रह करते हुए अतिथियों के प्रति आभार प्रगट किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० आशा शुक्ला ने किया।

'मधुरेश' को 'साहित्य-गौरव'

अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'खानकाह सूफी दीदार शाह चिश्ती' कल्याण (म०रा०) ने वार्षिक साहित्य-समारोह के अवसर पर हिन्दी, अवधी एवं ब्रजभाषा के सुकवि-साहित्यकार आचार्य भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' को अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका प्रतिभा चयन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट रचना सृजन-सम्मान प्रदान करते हुए 'हिन्दी साहित्य गौरव' की मानद उपाधि से अलंकृत एवं सम्मानित करते हुए सम्मान-पत्र प्रदान किया। उक्त उपाधि एवं सम्मान आचार्य मधुरेश की कृति 'गीत-गंगा' तथा राष्ट्रीयता प्रधान सत्साहित्य की पत्रिका 'सहकार' के सम्पादन-प्रकाशन हेतु दिया गया।

'पहल सम्मान' कथाकार संजीव को

प्रतिष्ठित 'पहल सम्मान' 2005 कथाकार अट्ठावन वर्षीय संजीव को दिया जायगा। उनके 11 कहानी संग्रह और 7 उपन्यास प्रकाशित हैं। संजीव को सर्वाधिक ख्याति उनके उपन्यासों 'सावधान नीचे आगे है' और 'सूत्रधार' से मिली। ये उपन्यास कोयला अंचल और बिहार के सुप्रसिद्ध गायक भिखारी ठाकुर के जीवन की पृष्ठभूमियों पर आधारित है।

पहल सम्मान 2005 जबलपुर में 25-26 फरवरी को आयोजित है।

श्री संतोष चौबे पर एकाग्र रचना समय

कवि-कथाकार, संस्कृतिकर्मी तथा साईंसदान श्री संतोष चौबे के रचनाकर्म पर एकाग्र 'रचना समय' का तीनदिनी आयोजन 19 से 21 सितम्बर 2005 तक अंतरंग, भारत भवन, भोपाल में हुआ।

तीनदिनी रचना समय की हर शाम क्रमश: संतोष चौबे की कहानी 'रेस्त्रां में दोपहर' (निर्देशक अशोक बुलानी) उपन्यास 'राग केदार' (निर्देशक विभा मिश्र) तथा श्री चौबे की परिकल्पना में तैयार की गई 50 वर्षों के श्रेष्ठ कवियों की कविताओं से सजी कविता यात्रा (संगीत-संतोष कौशिक, उमेश-धर्मेश) की सुन्दर कोरियोग्राफी के साथ सांगितिक प्रस्तुति की गई। इस तीनदिनी रचना समय में निर्देशक हबीब तनवीर, वरिष्ठ कवि श्री चन्द्रकांत देवताले, कवि-नाटककार श्री राजेश जोशी, कथाकार शशांक, जाने माने रंगकर्मी टी०वी०/फिल्म अभिनेता श्री राजेन्द्र गुप्त, प्रसिद्ध हास्य कवि प्रदीप चौबे साहित्यकार रामप्रकाश त्रिपाठी भारत भवन के न्यासी सचिव पवन जैन आदि अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे।

सुकेतु की पुस्तक को गार्जियन अवार्ड

महानगर मुम्बई की खूबियों और खामियों पर प्रकाश डालने वाली पुस्तक 'मैक्सिमम सिटी : बॉम्बे लॉस्ट एण्ड फाउड' की गार्जियन फर्स्ट बुक अवार्ड के लिए नामित किया गया है। पुस्तक के लेखक भारत के सुकेतु मेहता हैं।

गार्जियन फर्स्ट बुक पुरस्कार प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कारों में गिना जाता है।

करती हो तुम सदा रेडियो पर 'गुंजन' का दान।
'अपरा' निरुत्तरा बन बैठी होली पर यह मान?
घूँघट 'पल्लव' खोल बिखेरो 'रश्मि' रंग तो घोलो।
'स्वर्ण धूलि' से खेलो 'ग्राम्या' पर गरीब से बोलो

कलागुरु केदारशर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी से

पुस्तकें

वजन उजाले का, तोलती पुस्तकें
रहस्य अँधेरे का, खोलती पुस्तकें
मारक हैं बहुत, चीख सन्नाटे की
मौन रहकर ही, बोलती पुस्तकें।

नन्दल हितैषी, इलाहाबाद

आपका पत्र

पढ़ लिखकर चरित्र और परम्परा या संस्कृति की रक्षा करने की जगह, विद्यार्थी रट-रटाकर ऊँचे अंक पाने की फिराक में ही रहते हैं। परीक्षा का स्वरूप भी ऐसा ही हो गया है, रटा हुआ उगलने के सिवाय, विषय की गहराई की पकड़ ही नहीं है। ज्ञान उपार्जन की दृष्टि ही नहीं है तो नई पुस्तकें पढ़ना या स्वतंत्र विचार या कार्य करने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

आपने शिक्षा के माध्यम का मुद्दा उठाया है, वह जरूरी है। कक्षा 5 तक तो मातृभाषा ही होनी चाहिए। बाद में भी सिवाय 2-3 विषयों के या कम से कम 50 प्रतिशत विषय मातृभाषा में ही पढ़ाने चाहिए। अंग्रेजी के साथ हिन्दी भी अनिवार्य होनी चाहिए पर सिर्फ प्राथमिक श्रेणी तक समझने-पढ़ने तक। अगर किसी को अंग्रेजी में कार्य करने या पढ़ने बाहर जाना है, तो उसके लिए अलग व्यवस्था होनी चाहिए, जैसे आज भी अन्य देशों में जाने वालों के लिए फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी इत्यादि भाषाएँ सीखने की व्यवस्था है। ऐसे लोग पूरी आबादी के 1 प्रतिशत से भी कम हैं, उनके लिए 99 प्रतिशत को विदेशी भाषा का बोझ ढोना पड़े, यह कहाँ की स्वतंत्रता है ?

—के०के० सोमानी, मुम्बई

'भारतीय वाङ्मय' का सम्पादन गजब का है। पत्रिका का एक-एक पन्ना संग्रहणीय है।

'कमलेश्वर'जी का 'दुनियाँ को समझने के लिए पढ़िए किताबें' हमें पुस्तकों से मित्रता करने के लिए उकसाती है। कविताएँ तो प्रत्येक अंक को सहेजने हेतु हमें बाध्य कर देती हैं।

—बिनोदकुमार साहू, बरगढ़ (उड़ीसा)

नवम्बर अंक में श्री हृदयनारायण दीक्षित का लेख 'स्वर्णिम अतीत का अन्धकारमय भविष्य' वास्तव में प्रेरणादायक एवं हृदय स्पंदित करने वाला है। राष्ट्रीयता की भावना जागरित करने वाला, साहित्य चिन्तकों को प्रेरित करने वाला तथा पाठकों को प्रोत्साहित करनेवाला यह आलेख वास्तव में निबन्ध विधा का प्रतिनिधित्व करता है।

—पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

कभी-कभी तो लगता है कि गाँधी अब दिखावे के लिए महज फूल चढ़ाने की रस्म, और इसके सिवा कुछ भी नहीं। ये फूल भी तभी कोई खास एवं निजी उद्देश्य की प्राप्ति के आसार नज़र आते हों और इसका ज्वलंत सबूत यह है कि गाँवों में अब भी बहुत कुछ नहीं, किताबें भी नहीं कि बच्चे पढ़, समझ सकें। वहीं दूसरी तरफ शहरों में बाजार की चमक-धमक और हरेक की जुबान पर 'हैरी पॉटर'। अब तो बहुतों को शायद यह भी नहीं मालूम कि 'पंचतंत्र' किस चिड़िया का नाम है। ऐसे हालात हों जब जानबूझ कर ऐसा ही माहौल तैयार किया जा रहा हो जब, तब तो किताबों की कुर्की होना ही है और उनके पन्नों का रद्दी में बिक कर लिफ़ाफ़े बनना ही है ताकि उन्हीं लिफ़ाफों में किसी मॉल के चमकदार फ़र्श पर खड़े होकर चटकदार चाट खाई जा सके या भेलपूरी सागर के किनारे बगैर यह जानने-समझने की कोशिश के कि उसकी लहरों की बेचैनी तो आखिर किस कारण। यही वजह भी कि हिन्दी प्रदेश में ही 'भाषा की परीक्षा में 35 प्रतिशत छात्र अनुत्तीर्ण हो गए'।

ऐसी भयावह स्थिति में भी 'मुंशी प्रेमचंद के नाम घोषित योजनाएँ' सराहनीय हैं और इस बात का सबूत भी है कि अभी भी हमारे बीच धरहरों के बीज बचे हुए हैं। जरूरत है तो सिर्फ़ यह कि उनके अंकुरण के लिए एक सटीक वातावरण की।

—प्रभात पाण्डेय, काव्यम्, कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' में न केवल हिन्दी-साहित्य, वरन् समग्र साहित्य की गतिविधि का प्रामाणिक आकलन समाहित रहता है। ऐसी स्थिति में कृति और कृतित्व दोनों एकाकार हो जाते हैं। सम्पादक से ही पत्रिका की पहचान होती है, होने लगती है और पत्रिका से सम्पादक की। मैं आपका सम्पादकीय ही पहले पढ़ता हूँ, अन्य सभी प्रबुद्ध पाठक भी ऐसा करते होंगे। साहित्य के इतिहास-लेखकों के लिए 'भारतीय वाङ्मय' की भूमिका प्रामाणिक उपजीव्यकी है। इसमें सन्देह नहीं।

—साहित्य वाचस्पति **डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव**
पटना

हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा की रट लगानेवालों को भली प्रकार ध्यान में रखना चाहिए कि हिन्दी के मार्ग में दो बड़ी बाधाएँ हैं—1. देश में कुकुरमुत्तों की तरह बढ़ते जाते अंग्रेजी माध्यम के स्कूल। इन स्कूलों में पढ़नेवाले छात्र हिन्दी से अपरिचित होते जा रहे हैं। उनके भाषा ज्ञान और उच्चारण को सुनकर लगता है कि हिन्दी मूर्च्छित अवस्था में है। आठवीं कक्षा की एक पुस्तक में मार्जारी का अर्थ लिखा था—She Cat मादा बिल्ली, कोई पूछे इनसे कि क्या नर बिल्ली भी होती है। ये नहीं जानते कि मार्जार का अर्थ बिलाव है, और मार्जारी का अर्थ बिल्ली।

इन स्कूलों में ही नहीं, कालेजों में पढ़ानेवाले अध्यापकों तथा हिन्दी के नव-डॉक्टरों तक की वर्तनी सही नहीं है—अनेकों, अज्ञानता, सहस्त्रों, लावण्यता, ब्राम्हण आदि लिखना और बोलना आम बात है। तो यह हाल है राष्ट्रभाषा का।

2. राजभाषा की स्थिति के दो प्रबल उदाहरण हैं—संसद-सदस्य और हिन्दी के जाने-माने कवि बालवैरागी को राष्ट्रपति का निमंत्रण मिला। वह अंग्रेजी में था। बालकवि वैरागी ने उत्तर दिया—''पत्र राष्ट्रभाषा हिन्दी में होता तो मैं आपके दर्शन कर गौरव अनुभव करता। अंग्रेजी में होने के कारण मैं आने में असमर्थ हूँ।'' बालकवि वैरागी का पत्र चूँकि हिन्दी में था, अत: उत्तर नदारद। कविवर को फिर नहीं बुलावा आया। दूसरा उदाहरण विष्णु प्रभाकर का है ही। बड़ी थुक्का-फजीहत हुई थी।

सरकारी क्षेत्रों में आज हिन्दी कोई नहीं पूछता। कारण, राष्ट्रपति हों, चाहे प्रधानमंत्री या अन्य कोई मंत्री। किसी के भी सचिवों और निजी सचिवों को हिन्दी से कुछ लेना-देना नहीं है। डॉ० मनमोहन सिंह जब कपूरथला में गवर्नमेंट कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे, तब उनका मेरा परिचय था। वे जब प्रधानमंत्री बने तो मैंने बधाई का पत्र लिखा, पुरानी स्मृति भी दिलाई। उत्तर नदारद। राष्ट्रपति को भी पत्र लिखा कि आप भी लेखक हैं, मैं भी हूँ। पुस्तकों का आदान-प्रदान हो जाए और साहित्य की दशा दिशा पर कुछ चर्चा-दर्शन करना चाहूँगा। उत्तर नदारद। संसद में सोमनाथ चटर्जी को 'प्रसार-भारती' की नीति के सम्बन्ध में लिखा। उत्तर नदारद। लगभग एक मास से ऊपर हो आया, मैंने प्रधानमंत्री की अपील पर 'राष्ट्रपति आपदा सहायता कोष' के लिए एक हजार दो सौ पचास रुपये का चेक भेजा था और लिखा था कि मैं स्वाधीनता सेनानी हूँ, मेरी आय का कोई साधन नहीं है, स्वाधीनता सेनानी की पेंशन में से ही यह राशि भेज रहा हूँ। चेक मिलने की स्वीकृति दें। उत्तर नदारद। तो यह है राजभाषा हिन्दी की स्थिति। शासक हिन्दी को स्वीकारने को तैयार नहीं हैं।

प्रस्तुत अंक के मुख पृष्ठ पर ललकार है—'हे देश के कर्णधार' साथ ही विश्वविद्यालय की वैश्विकता पर विचार प्रस्तुत किए गये हैं। मैं दोनों से पूर्णतया सहमत हूँ। परन्तु विडम्बना तो यह है कि कर्णधार विदेशों में अपनी छवि सुधारने में लगे हैं, देश की समस्याओं से उन्हें क्या लेना-देना। विश्वविद्यालयों के नाम वे ही लोग बदल रहे हैं जो या तो अपना नेतृत्व चाहते हैं या विरोधाभास का जीवन जीना चाहते हैं। एक ओर तो मनुवादियों को गालियाँ दी जाती हैं और मूर्तिपूजा का विरोध किया जाता है। दूसरी ओर दादा साहबों या ज्योतिवाओं के नाम पर विश्वविद्यालयों के नाम रखे जाते हैं और दूर के दूर चौराहे और पार्क में इनकी प्रतिमाएँ स्थापित की जाती हैं। पहले स्थान का महत्त्व था, अब नाम का हो गया है। देश में कभी नालन्दा, विक्रमशिला, तक्षशिला विश्वविद्यालय हुआ करते थे। वर्तमान समय में बनारस विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, आगरा विश्वविद्यालय, मेरठ विश्वविद्यालय आदि का नाम विख्यात था। इनमें पढ़ना-पढ़ाना गौरव और गर्व की बात थी। आज इनकी जो दुर्दशा हो रही है, वह जगजाहिर है।

आज तो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की याद आती है और उनके शब्दों में कहने को विवश होना पड़ता है—

आवहु सब मिलि रोवहु भाई!
हा-हा! दुर्दशा देश की देखी न जाई॥

—विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक', साहिबाबाद

स्मृति शेष

अमृता प्रीतम

पंजाबी की सुप्रसिद्ध लेखिका हिन्दी पाठकों की सर्वप्रिय **अमृता प्रीतम** का सोमवार, 31 अक्टूबर 2005 को अपराह्न अपने हौजखास निवास दिल्ली में निधन हो गया। तीन वर्ष पूर्व स्नानागार में फिसलने के कारण कूल्हे की हड्डी टूटने से वे शय्याग्रस्त रहती थीं। 31 अगस्त 1919 को पाकिस्तान के गुजराँवाला में उनका जन्म हुआ था। उनकी रचनाओं में भारत-पाक विभाजन की व्यथा बोलती है। उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास 'पिंजर' पर फिल्म बनी जो सर्वाधिक लोकप्रिय और पुरस्कृत हुई। 1986 में वे राज्यसभा के लिए मनोनीत हुईं। गतवर्ष उन्हें पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने वाली वे प्रथम लेखिका थीं। 1982 में उनकी कृति 'कागज के केनवास' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। 1937 में वे लाहौर रेडियो से जुड़ी थीं। 1948 से 1961 तक वे आकाशवाणी दिल्ली से जुड़ी रहीं। दिल्ली, जबलपुर, विश्वभारती विश्वविद्यालयों ने उन्हें डी०लिट्० की मानद उपाधियों से सम्मानित किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—पाँच बरस, लम्बी सड़क, पिंजर, अदालत, कोरे कागज, उंचास दिन, सागर और सीपियाँ, नागमणि, दिल्ली की गलियाँ, तेरहवाँ सूरज, रसीदी टिकट, कहानियों के आँगन में, एक थी सारा इत्यादि।

उनका साहित्य एक ऐसी औरत की कहानी है जो प्रेम की तड़प, अस्मिता की पहचान और लोक-जीवन की धड़कन को दर्ज करने के लिए जीवन भर संघर्ष करती रहीं। उन्होंने 'रसीदी टिकट' पर अपनी जिन्दगी की इबारत लिखी। वे कहती हैं—''जिन्दगी जाने कैसी किताब है, जिसकी इबारत अक्षर-अक्षर बनती है और फिर अक्षर अक्षर टूटती, बिखरती और बदलती है।''

ऐसी थी अमृता प्रीतम की जिन्दगी।

मेरा सूरज बादलों के मध्य सोया हुआ है
जहाँ कोई सीढ़ी नहीं, कोई खिड़की नहीं
और वहाँ पहुँचने के लिए
सदियों के हाथों ने जो डण्डी बनायी है
वह मेरे पैरों के लिए बहुत सँकरी है।

अमृता प्रीतम ने पंजाब की नदियों को गंगा-जमुना से जोड़ एक नये साहित्य की सृष्टि की। वे सदा स्मरणीय रहेंगी।

श्रद्धांजलि

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

कथाशिल्पी श्री निर्मल वर्मा को श्रद्धांजलि

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने कथाशिल्पी श्री **निर्मल वर्मा** की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। वरिष्ठ आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने इस श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता की।

हरीश नवल ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि निर्मलजी का अवसान दु:ख का विषय है। इसमें सन्देह नहीं कि वे श्रेष्ठ रचनाकार के अतिरिक्त गम्भीर चिन्तक भी थे। उन्होंने भाषा को नया रूप और नया प्रतीक रूप दिया। वे शब्द सेतु बनाने वाले विद्वान थे। कथाकार और पत्रकार महेश दर्पण, डॉ० प्रेम सिंह, बलदेव वंशी, डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल, कथाकार हिमांशु जोशी, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने निर्मल वर्मा की साहित्य की विशिष्टता की चर्चा करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो० नामवर सिंह ने कहा कि अक्सर कहा जाता है कि ''हर आदमी अकेला मरता है। मैं यह नहीं मानता। वह उन सब लोगों के साथ मरता है, जो उसके भीतर थे, जिनसे वह लड़ता था या प्रेम करता था। वह अपने भीतर पूरी एक दुनिया लेकर जाता है। इसलिए हमें दूसरों के मरने पर जो दु:ख होता है, वह थोड़ा बहुत स्वार्थी किस्म का दु:ख है, क्योंकि हमें लगता है कि इसके साथ हमारा एक हिस्सा भी हमेशा के लिए खत्म हो गया है।''

भारतीय विश्वविद्यालयों

के

बी.एड., बी.पी.एड., बी. फार्मा, बी.ए., बी.काम., बी.एस-सी., एम.ए., एम.काम., एम.एस-सी., एम.सी.ए., एम.बी.ए., गृह विज्ञान पाठ्यक्रमानुसार

संदर्भग्रंथ, सामयिक तथा साहित्यिक विषयों पर नवीनतम पुस्तकें

अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत में

विश्वविद्यालय प्रकाशन

(तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम)
चौक, वाराणसी

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail: sales@vvpbooks.com

पुस्तकें सर्वोत्तम मित्र

अच्छी-अच्छी पुस्तकों के सम्पर्क में रहने और अध्ययन करने से जीवन कितना समृद्ध बन सकता है। पुस्तकें ही सर्वोत्तम और स्थायी मित्र हैं। पुस्तकें कभी-कभी तो हमारे सामने ही अस्तित्व में आती हैं, जन्म लेती हैं; लेकिन हमें जीवनभर अपनी जीवन-यात्रा के दौरान इनसे मार्गदर्शन मिलता है और यह मार्गदर्शन पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनंतकाल तक जारी रहता है। मैंने सन् 1953 में चेन्नई के मूर मार्केट के एक पुराने बुक स्टोर से एक पुस्तक खरीदी थी 'लाइट फ्रॉम मेनी लैंप्स'। पुस्तक के संपादक हैं, वॉस्टन, लिलियन ईचलर। सचमुच, यह पुस्तक मेरा घनिष्ठ मित्र बन गयी थी और पचास वर्षों से भी अधिक समय तक उसे मैंने अपने साथ रखा। मैं उसे इतना ज्यादा प्रयोग में लाता था कि इतने समय में कई बार तो उसकी जिल्दसाजी करवानी पड़ी थी। पुस्तक के रूप में एक अच्छा मित्र यदि हमारे साथ है, तो हमारी समस्या में, मानसिक व्यथा में वह महान् लोगों के अनुभवों पर आधारित नुस्खे से हमारी समस्या को सुलझाती है, हमें सांत्वना देती है और जब कभी आप अत्यधिक खुशी का अनुभव करने लगते हैं तो उस स्थिति में भी यह आपके मन को हलके से स्पर्श करते सन्तुलित भाव उत्पन्न करती है। पुस्तक के महत्त्व का अहसास मुझे एक बार और उस समय हुआ, जब मेरे एक मित्र जो न्यायिक विभाग में हैं ने सन् 2004 में उसी पुस्तक का नया संस्करण मुझे भेंट किया। पुस्तक भेंट करते हुए उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं आपको जो सबसे अच्छी वस्तु भेंट कर सकता हूँ, वह यही पुस्तक है। हो सकता है, अब से पचास वर्ष बाद यही पुस्तक अपने नए अवतार में अस्तित्व में आ जाए। सचमुच, देखा जाए तो पुस्तकों का जीवन तो शाश्वत होता है।

—राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

उदारीकरण और निजीकरण से उपजी समस्याओं को चिह्नित करने और उनका समाधान खोजने में हिन्दी की पत्रकारिता काफी समर्थ है। हिन्दी पत्रकारिता में इतना क्रान्तिकारी बदलाव आ चुका है कि अंग्रेजी अखबारों पर अब निर्भरता कम हो गयी है। पहले खबरों की भूख मिटती नहीं थी। अब यह स्थिति नहीं है। हिन्दी पत्रकारिता में काफी विविधता आई है। सामाजिक आर्थिक समस्याओं को अखबार के पन्नों में जगह मिलने लगी है। हिन्दी अखबारों में अब सम्पूर्ण पत्रकारिता परिलक्षित होने लगी है।

—टी०एन० चतुर्वेदी, राज्यपाल, कर्नाटक

लोकार्पण

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
द्वारा प्रकाशित
तीन ग्रन्थों का लोकार्पण

उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत द्वारा ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए
साथ में कुलपति प्रो० अशोककुमार कालिया

नई दिल्ली स्थित उप-राष्ट्रपति भवन के अधिवेशन-कक्ष में 18 अक्टूबर को महामहिम उप-राष्ट्रपति श्री भैरो सिंहजी शेखावत ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के तीन ग्रन्थों—'कातन्त्रव्याकरणम् : चतुर्थो भाग:', 'संस्कृत व्याकरण की प्राविधिक शब्दावली का विवेचन' तथा प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी के 'अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्' का लोकार्पण किया। इस ग्रन्थ द्वारा लेखक ने संस्कृत काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा में एक महत्वपूर्ण कड़ी जोड़ी है। इसमें काव्यशास्त्र के सभी विषयों का आधुनिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है। विश्वविद्यालय के प्रकाशन-निदेशक डॉ० हरिश्चन्द्रमणि त्रिपाठीजी ने स्वागत-भाषण में महामहिम उप-राष्ट्रपतिजी के संस्कृत-भाषा एवं साहित्य के प्रति प्रेम, अनुराग एवं समर्पण की चर्चा की।

माननीय श्री भैरोसिंह शेखावतजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि संस्कृत-साहित्य में ज्ञान-विज्ञान का असीम भण्डार है। आज के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी युग में इस पर और अधिक शोध एवं अनुसन्धान की आवश्यकता है, जिससे संस्कृत को भी रोजगारपरक बनाया जा सके। मैक्समूलर एवं ह्विटनी जैसे विद्वानों ने भी संस्कृत-भाषा और उसके व्याकरण की प्रशंसा की है। व्याकरण की वैज्ञानिकता एवं सफलता के आधार पर आज इसे कम्प्यूटर-प्रणाली में प्रयोग करने की आवश्यकता है। महामहिम उप-राष्ट्रपतिजी ने वाराणसी आकर सरस्वती भवन पुस्तकालय में संगृहीत हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को देखने की इच्छा व्यक्त करते हुए यह आश्वासन भी दिया कि वे ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु हरसम्भव सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० अशोक कुमार कालिया ने कहा कि विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन पुस्तकालय में दुर्लभ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का अद्‌भुत संग्रह है, जिन्हें सीमित संसाधनों के अन्तर्गत विश्वविद्यालय द्वारा ग्रन्थों के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। महामहिमजी की इच्छानुरूप शीघ्र ही किसी विशिष्ट समारोह में माननीय महामहिम को निमन्त्रित कर वाराणसी आने हेतु अनुरोध किया जायेगा, जिससे उनके निर्देशानुसार हमारे प्रकाशन की गति एवं विकास में वृद्धि हो सके।

इस समारोह में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कुलसचिव और प्रकाशन विभाग के निर्देशक के अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय के कई प्राध्यापक तथा दिल्ली के अनेक विद्वान् उपस्थित थे।

'संस्कृत ट्रेजर्स' का लोकार्पण

प्रो० सत्यव्रत शास्त्री मानद प्रोफेसर जे०एन०यू० की सात खण्डों में प्रकाशित 'संस्कृत ट्रेजर्स' (संस्कृत निधि) का लोकार्पण राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में शनिवार, 19 नवम्बर 2005 थाई की राजकुमारी संस्कृत की विदुषी विद्वान् **महाचक्रि श्रीं धोर्न** ने किया। 1600 पृष्ठों में प्रकाशित इस ग्रन्थ में प्राचीन भारतीय प्रज्ञा का समावेश है। संस्कृत और प्राच्य विद्या के सात भिन्न प्रकरणों—व्याकरण, भाषाशास्त्र, महाकाव्य, पुराण शास्त्र, दर्शन और धर्म के विशद विवेचन के साथ दक्षिण पूर्व एशिया समाज और संस्कृति पर भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस अवसर पर इण्डियन कौंसिल फॉर कल्चरल रिलेशंस के अध्यक्ष **डॉ० कर्ण सिंह** ने कहा—संस्कृत राष्ट्रीय एकता को समृद्ध करने के साथ संस्कृत विद्वानों को भी अवसर प्रदान करती है जिन्होंने हमारे प्राचीन ज्ञान को व्याख्यायित किया है। इस अवसर पर लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय विद्यापीठ के कुलपति **वाचस्पति उपाध्याय** तथा राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक **के०के० चक्रवर्ती** भी उपस्थित थे।

'राष्ट्रधर्म' का लोकार्पण

लखनऊ से प्रकाशित 'राष्ट्रधर्म' मासिक के हिन्दू चेतना विशेषांक का लोकार्पण गोरक्षपीठ गोरखपुर के उत्तराधिकारी तथा सांसद **योगी आदित्यनाथ** ने किया। अपने प्रेरक उद्‌बोधन में योगीजी ने कहा—आह हमें शान्ति के बदले क्रान्ति का मंत्र अपनाना होगा तथा शास्त्रों के साथ शस्त्रों का भी सहारा लेना होगा।

समारोह की अध्यक्षता **डॉ० दाऊलाल गुप्त** ने की।

समारोह में ललित निबन्ध के लिए खण्डवा (म०प्र०) के **डॉ० श्रीराम परिहार** तथा नाटक के लिए बिजनौर (उ०प्र०) के **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** को 10,000 रुपये के 'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान' से अलंकृत किया गया।

वर्ष 2005 का राधेश्याम चितलांगिया स्मृति अ०भा० कहानी प्रतियोगिता के लिए प्रथम पुरस्कार (5,000 रुपये) लखनऊ के **संजीव जायसवाल** 'संजय' को, द्वितीय पुरस्कार (3,000 रुपये) पूर्णिया, बिहार की **श्रीमती निरुपमा राय** को, तृतीय पुरस्कार (2,000) सागर, म०प्र० के **डॉ० वा०मो० आठले** को तथा तीन सांत्वना पुरस्कार (1,000 रुपये) छिन्दवाड़ा, म०प्र० के श्री दिनेश भट्ट, टीकमगढ़, म०प्र० की **श्रीमती स्निग्धा श्रीवास्तव** तथा गुलबर्गा, कर्नाटक के **श्री दिलीप शा० घवालकर** को प्रदान किया गया। सभी सम्मानित साहित्यकारों को अंगवस्त्र, प्रमाणपत्र तथा स्मृतिचिह्न भी प्रदान किया गया।

संस्कृति के चार सोपान

आचार्य डॉ० महेशचन्द्र शर्मा की द्वितीय विशिष्ट कृति 'संस्कृति के चार सोपान' का लोकार्पण कर छत्तीसगढ़ शासन के पर्यटन तथा संस्कृति मंत्री माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल ने लेखक डॉ० शर्मा को बधाई दी

डॉ० महेशचन्द्र शर्मा की कृति 'संस्कृति के चार सोपान' का लोकार्पण भिलाई में छत्तीसगढ़ के संस्कृति व पर्यटन मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने लोकार्पण किया। पद्मश्री डॉ० शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पत्रकार बबनप्रसाद मिश्र, डॉ० चितरंजनक्कर तथा अनेक बुद्धिजीवियों ने कृति की विशिष्टता की चर्चा की। कहा गया—संस्कृति अमूर्त होती है, वह जटिल भी होती है, उसमें धर्म, दर्शन, कला और अध्यात्म की समग्रता है, जो परम्परा में जीवित होती है।

भौगोलिक चिन्तन उद्‌भव एवं विकास
डॉ० श्रीकान्त दीक्षित
द्वितीय संस्करण : 2006
PB : ISBN : 81-7124-461-0
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 140.00

पुस्तक समीक्षा

काशी में मोक्षकामी प्रवासी विधवाएँ

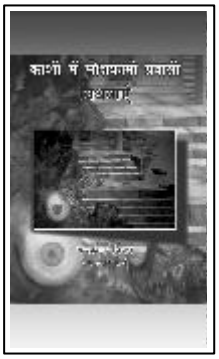

सत्यप्रकाश मित्तल
रामलखन मौर्य

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-409-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 200.00

बंगाल, बिहार, आसाम, कर्नाटक, आन्ध्र, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, नेपाल अन्यान्य प्रान्तों देशों की विधवाएँ मोक्षकाना से प्रभावित हो भगवान शिवनगरी में शताब्दियों से निवास करती रही हैं। काशी, मथुरा, वृन्दावन, अयोध्या, ऋषिकेश, चित्रकूट इसके प्रमुख केन्द्र रहे हैं। इन समस्त वृत्तान्तों को 'काशी में मोक्षकामी प्रवासी विधवाएँ' नामक पुस्तक में खोजी दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया गया है। लेखकद्वय ने यह अध्ययन सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से सम्पन्न किया है।

इस कृति में भारतीय नारी की ऐतिहासिक अव्यवस्था का चित्रण तो हुआ ही है, साथ ही नगरों, तीर्थों की वास्तविकताएँ तथा विशेषताएँ, अन्नक्षेत्र, पुण्य क्षेत्र और कालगत विकृतियों की जीवंत चित्र पुस्तक की उपयोगिता बढ़ा देते हैं।

आज जहाँ नारी विमर्श के नाम पर तमाम अनर्गल राग अलापे जा रहे हैं वहीं यह अध्ययन वस्तुनिष्ठ तथा व्यावहारिक भूमिका का दर्शन कराता है। **— उदय प्रताप,** *हिन्दुस्तान से*

आषाढ़स्य प्रथम दिने
(कविता संग्रह)

मूल लेखक
नारायण सुमंत
अनुवादक
गिरीश काशिद

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-407-6
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 80.00

बंजर ज़मीन पर उगी कविता

'आषाढ़स्य प्रथम दिने' मराठी कवि नारायण सुमंत का मात्र कृषक जीवन से सम्बन्धित कविताओं का संकलन है। कवि स्वयं किसान है, अत: ग्रामीण जीवन को उसकी दारुण व्यथा, मानव एवं प्रकृतिजनित समस्याओं तथा सुगबुगाते हुए आक्रोश के साथ अभिव्यंजित करती हैं। इन कविताओं में मात्र अपने दैन्य का रोना-धोना नहीं है, वरन् उसके निराकरण हेतु आत्म-बलिदान का आवाहन भी है। संकलन किसान आन्दोलन में शहीद हुए किसानों को समर्पित है। संकलन का 'समर्पण' उसकी मूल भावना को अभिव्यक्त करता है।

संग्रह की शीर्षक कविता 'आषाढ़स्य प्रथम दिने' कालिदास के सौन्दर्यमूलक 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे...' के सम्पूर्ण कान्ट्रास्ट में खड़ी, वर्षा ऋतु के सन्दर्भ में कटु जमीनी वास्तविकता से रूबरू कराती अत्यन्त मार्मिक रचना है। इस कविता की अन्तिम पंक्तियाँ देखें—''वह सिलती है फिर /वही फटी-पुरानी धोती / वर्षा ऋतु के अन्तिम दिन!'' (पृ० 25)

कवि नारायण सुमंत की कविता की भाषा विषय के अनुकूल सीधी सादी है और अपेक्षित करारापन लिए हुए है। भाषा सहज संप्रेषणीय है। कहीं-कहीं प्रतीकों का प्रयोग भी हुआ है। ये कविताएँ निश्चित रूप से गाँवों का 'एक्सप्रेस रेल की खिड़की से झाँक कर' किया गया निरीक्षण नहीं है। **—राजेन्द्र नागदेव,** विषयवस्तु से

बुद्धकालीन सामाजिक-आर्थिक जीवन
[सुत्तपिटक के विशेष सन्दर्भ में]

डॉ० अखिलेश्वर मिश्र

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-456-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 180.00

सुत्तपिटक पालि-त्रिपिटक का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसमें भगवान बुद्ध के उपदेश संगृहीत हैं। इन उपदेशों से बौद्ध धर्म के प्रारम्भिक स्वरूप पर प्रकाश पड़ने के साथ-साथ प्रसंगवश घटनाओं, स्थानों, व्यक्तियों एवं उपमाओं का भी उल्लेख मिलता है। इनके लौकिक जीवन से संबद्ध होने के कारण इनसे भौतिक जीवन (भौतिक संस्कृति) के विभिन्न पक्षों की जानकारी होती है। ग्रन्थ की अनुक्रमणिका—1. भूमिका, 2. ग्रामीण एवं नगरीय जीवन का तुलनात्मक अध्ययन, 3. भवन एवं भवन-निर्माण की कला, 4. व्यवसाय एवं वाणिज्य, 5. कृषि एवं पशुपालन।

बुद्धकालीन समाज, जीवन एवं संस्कृति का प्रामाणिक अध्ययन।

काव्य की भाषा तमाशा हो गई
धुन रही सिर व्याकरण है आजकल
पश्चिमी संसार ने जादू किया
बुद्धि पर एक आवरण है आजकल
प्यार करुणा सत्य सेवा से गुरु
रिक्त अन्त:करण है आजकल।
— पं० गिरिमोहन गुरू, होशंगाबाद

नवशती हिंदी व्याकरण

बदरीनाथ कपूर

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली
मूल्य : 95.00

डॉ० बदरीनाथ कपूर हिन्दी कोश एवं व्याकरण के अध्येता, निर्माता हैं। वे प्रत्येक क्षण शब्द, अर्थ, व्याकरण की चिन्ता में रहते हैं। अब तक उनके अनेक कोश एवं व्याकरण की पुस्तकें विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित हैं। 'नवशती हिन्दी व्याकरण' उनका नवीनतम कार्य है। हिन्दी में प्राय: छात्रोपयोगी व्याकरण ही लिखे जाते हैं। हर प्रकाशक कोई न कोई व्याकरण छापे है।

कभी-कभी एक से अधिक छापे हैं। किन्तु वे सभी पुनरुक्ति की जड़ता से ग्रस्त हैं। धीरे-धीरे व्यारकण का अध्ययन-अध्यापन समाप्त है। ऐसे

डॉ० बदरीनाथ कपूर प्रख्यात भाषाविद् और कोशकार हैं। उन्होंने अपनी कृतियों से देश-विदेश में हिन्दी का मान बढ़ाया है। 'नवशती हिन्दी व्याकरण' इनकी नई कृति है। वर्तमान नई शती की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर इसे तैयार किया गया है। चिंतन-मनन, विवेचन-विश्लेषण तथा मुद्रण-प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से यह मनोरम कृति है। कर्ता, कर्म, वाच्य, काल-विभाजन आदि सम्बन्धी अनेक मूलभूत परन्तु शिथिल और संदिग्ध प्रचलित अवधारणाओं की डॉ० कपूर ने हिन्दी की प्रकृति को ध्यान में रखकर नवीन तर्कसंगत परिभाषाएँ की हैं। उनका साहस, अध्यवसाय तथा भाषा के प्रति निष्ठा अभिनन्दनीय है। इस कृति से राष्ट्रभाषा हिन्दी का मस्तक बढ़ेगा।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

में डॉ० कपूर के साहस की प्रशंसा करनी चाहिए। वे एक अत्यन्त उपयोगी किन्तु अत्यंत उपेक्षित विषय पर चिन्तन, मनन, लेखन करते हैं। व्याकरण का निर्माण कठिन कार्य है। डॉ० कपूर इसे सरल करते हैं। व्याकरण की सत्ता भाषा की स्थिति से जुड़ी है। जैसी भाषा वैसा व्याकरण। अत: व्याकरण के नियम कभी-कभी कठिन हो जाते हैं। उदाहरण के लिए व्यारकण में विशेषण को संज्ञा की विशेषता या संज्ञा की विशेषता

अलगाने वाला बताया जाता है। सामान्यत: यह ठीक है। सुबोध भी है। किन्तु लेखक कुछ अतिरिक्त कहना चाहता है। डॉ० रामदेव शुक्ल की कहानी 'नीलाम घर' में 'नीलाम' केवल विशेषता नहीं बताता। ऐसे ही 'ताजी मुस्कान', 'चौड़ी मुस्कान' जैसे प्रयोग संज्ञा में विशेषण का आरोप करते हैं। संज्ञा को विशिष्ट बनाते हैं। काली गाय में काली सर्वत्र है। स्थायी अत: जड़ है। किन्तु नीलाम, ताजी, चौड़ी न स्थायी हैं, न जड़। ये तीनों विशेषण आरोपित हैं। उत्कर्ष-बोधक हैं। विशिष्ट प्रकार का बिम्ब बनाते हैं। गुण की अपेक्षा बिम्ब में विस्तार और अर्थ-गांभीर्य हैं। कपूर साहब ऐसी बातों पर ध्यान देते हैं।

डॉ० कपूर का व्याकरण विद्वानों में प्रतिष्ठ होगा। **—डॉ० युगेश्वर**

'नई धारा' का व्यंग्य विशेषांक

'नई धारा' के विशेषांकों की एक समृद्ध परम्परा रही है। इसी परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भारतीय व्यंग्य विशेषांक है। भारतीय व्यंग्य विधा पर आधारित इस विशेषांक के प्रकाशन के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए 'व्यंग्य लेखन की रचनात्मक दृष्टि' शीर्षक सम्पादकीय में 'नई धारा' के सौजन्य सम्पादक शिवनारायण कहते हैं—''व्यंग्य के नाम पर अखबारों में रात-दिन जो कुछ भी पढ़ने को मिलता है, वास्तव में उनमें से अधिकांशत: व्यंग्य होता ही नहीं है। चुटकुलेबाजी के अन्दाज में उनमें जो कुछ उपलब्ध होता है, उनसे व्यंग्य की पहचान पर ही संकट मँडराता दिखता है। अपने नए आयामों और भाषिक अभिलक्षणों के साथ भारतीय व्यंग्य साहित्य के निखरे हुए भविष्य की कामना ही 'नई धारा' के इस 'भारतीय व्यंग्य विशेषांक' के मूल में है।''

भारतीय व्यंग्य विशेषांक के माध्यम से समस्त भारतीय साहित्य में बिखरे व्यंग्य के विभिन्न स्वरूपों की अभिव्यक्ति के साथ साथ व्यंग्य पर आधारित गम्भीर आलेखों के माध्यम से स्वस्थ व्यंग्य लेखन प्रविधि, व्यंग्य लेखन की चुनौतियों तथा भारतीय व्यंग्य विधा की विकास यात्रा से पाठकों को रूबरू कराना 'नई धारा' के इस विशेषांक का अभिप्राय है।

पत्रिका में परसाईजी तथा शरद जोशीजी की विभिन्न व्यंग्यांशों की यत्र तत्र उपस्थिति इस विशेषांक को रोचकता तथा विशिष्टता प्रदान करती है, नई धारा के इस अंक में एक ओर व्यंग्य के सैद्धान्तिक पक्ष को विभिन्न आलेखों में उजागर किया गया है तो दूसरी ओर विभिन्न भारतीय भाषाओं के व्यंग्यकारों की रचना का हिन्दी अनुवाद इस विशेषांक को पुष्ट कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में चार हिन्दी व्यंग्य रचनाओं में लतीफ घोंघी जगदीश ना० चौबे, रेखा व्यास, सुधा रानी श्रीवास्तव की रचना संकलित है।

'नई धारा' का यह व्यंग्य विशेषांक भारतीय साहित्य में व्यंग्य की बानगी प्रस्तुत करने में अत्यन्त सफल है।

पाठ्य-पुस्तकों का राजनीतिकरण

एनसीईआरटी तथा शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार पिछले एक डेढ़ वर्ष से शिक्षा पद्धति को विकृत कर रहे हैं। वे न तो विषयवस्तु की ओर ध्यान देते हैं, न ही भाषा की, और न ही ऐतिहासिक तथ्यों की ओर, एवं तथ्यों के विषय में कोई सच्ची तथा स्पष्ट नीति अपना रहे हैं बल्कि ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़कर बिना प्रमाणों के पाठ्य-पुस्तकों में सम्मिलित कर रहे हैं। भारतीय इतिहास के साथ तो न जाने क्या-क्या खिलवाड़ हो रहा है, परन्तु कोई आवाज़ उठानेवाला नहीं, आवाज़ उठाए भी तो नक्कारे में तूती की आवाज़ कौन सुनता है। मीडिया सरकारी तन्त्र के साथ जुड़ा है।

— सुखपाल गुप्त, नई दिल्ली

गाँव का आदमी डॉ० रामदरश मिश्र

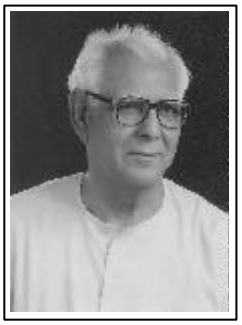

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार, कवि, आलोचक डॉ० रामदरश मिश्र के जीवन पर पीपुल्स अकादमी ने वृत्तचित्र (फिल्म) का निर्माण किया है। 21 अक्टूबर 1905 को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सभागार में पीपुल्स विजन के अध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश ने संस्था का परिचय प्रस्तुत करते हुए फिल्म प्रदर्शित की। घण्टे भर की इस फिल्म में रामदरश मिश्र के बचपन से लेकर अब तक एवं गाँव से लेकर दिल्ली तक की यात्रा के विविध आयामों को समेटते हुए विभिन्न विधाओं में उनके साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया है। अनेक लेखकों के वक्तव्यों ने उनके साहित्य के विविध रंगों का आकलन किया है। फिल्म का आलेख डॉ० महीप सिंह ने तैयार किया है जिसे श्री अतुल ने स्वर प्रदान किया। फिल्म का निर्देशन श्री रामजी यादव ने किया।

मातृभाषा की सहजता

बच्चा जिस भाषा को अच्छी तरह समझता हो, उसे उसी भाषा की किताबें पढ़ने को दें। मातृभाषा से बच्चा भलीभाँति परिचित होता है,इसलिए उसे उसकी मातृभाषा वाली किताबें ही दें। जब एक भाषा में बच्चे की पढ़ने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है, तब वह दूसरी भाषा को सीखकर उस भाषा से सम्बन्धित किताबें भी पढ़ सकता है।

पत्रिकाएँ

कला समय (द्वैमासिक सांस्कृतिक पत्रिका)
अगस्त-सितम्बर 2005 अंक में जावेद अख्तर और भीष्म साहनी पर विशेष सामग्री
सम्पादक : **विनय उपाध्याय**
एम०एक्स-226 ई-7, अरेरा कालोनी, भोपाल
मूल्य : 125.00

सहकार
मानवता अंक (सितम्बर 2005)
सम्पादक : **भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'**
362 सिविल लाइन्स, उन्नाव-209 801

वर्तमान साहित्य (मासिक)
सम्पादक : **कुँवरपाल सिंह, नमिता सिंह**
28 एम०आई०जी०, अवंतिका-1, रामघाट
अलीगढ़-202 001

रंग संवाद (त्रैमासिक)
सम्पादक : **राजकमल नायक**
अभिव्यक्ति राज्य संसाधन केन्द्र, भोपाल-462039

संकल्प (त्रैमासिक)
सम्पादक : **प्रो० टी० मोहन सिंह**
हिन्दी अकादमी, जनप्रिया टाउनशिप
मल्लापुर, हैदराबाद-500076

मंथन
सम्पादक : **महेश अग्रवाल**
अग्रसेन टावर, तल मजला, कोलबाड रोड
थाने (प०) - 400 601

पृष्ठ 1 का शेष

कहानीपन में नहीं, उस भभकती इंटेंसिटी में था, जो शब्दों की आँच से हमारे भाव-जगत को धीरे-धीरे उबालने लगती है। 'मानसबल का वक्ष, रात' यह एक वाक्य आज भी तीर की तरह बिंधा है। पहली बार हिन्दी कथा साहित्य में प्रकृति सिर्फ पृष्ठभूमि नहीं, स्वयं पात्रों की 'प्रकृति' में सांझा करती जान पड़ती है। इसलिए यह आकस्मिक नहीं जान पड़ता कि उन दिनों यह खबर जोरों पर थी कि शेखर पर ज्यां क्रिस्तोफ का गहरा असर है—शायद संवेदन के स्तर पर भले ही उसकी छाया अज्ञेय पर पड़ी हो किन्तु भाषा के ओज और व्यक्ति की आदर्शवादिता के अलावा दोनों में कोई साम्य नहीं दिखता।

एक ही जिन्दगी में हम पुस्तकों के सहारे न जाने कितनी विचित्र जिन्दगियों के गली-गलियारों में घूम आते हैं। आज यदि कोई मुझसे पूछे, तुम्हारे लिए सबसे बड़ा सुख क्या है, तो मैं बिना कुछ सोच-विचार किये कह सकता हूँ... किसी उन्मादी दुपहर में घने पेड़ के नीचे चेखव की कोई कहानी या टॉमस मान का उपन्यास या रिल्के के पत्र पढ़ना। और यदि यह सब न हो तो जापानी या प्राचीन चीनी या हायकू कविताओं की पतली-सी पुस्तक जो मैं धीमे बुखार के मौसम या पतझड़ के दिनों में पढ़ना चाहूँगा।

पुस्तक-प्राप्ति

सुखद-दुखद गृहस्थ जीवन एवं भारतीय नारी
आदित्यप्रसाद अग्रवाल
मूल्य : 240.00

श्री सरल रोचक रामायण (राम कीर्तन)
ब्रह्मलीन श्री महावीरप्रसादजी त्रिपाठी
मूल्य : 195.00
प्रकाशक : श्री बालाजी मानव कल्याण पब्लिक सेवा ट्रस्ट, इलाहाबाद

स्वतंत्रता का अद्यतन सन्दर्भ
सम्पादन : **कृष्णनाथ**
प्रकाशक : सेंटर फॉर सोशल रिसर्च, नई दिल्ली
मूल्य : 150.00

आत्मा, पुनर्जन्म, कर्मभोग एवं प्रेतयोनि
आदित्यप्रसाद अग्रवाल
मूल्य : 400.00

रामचरित-महाकाव्य : एक आकलन
लेखक : **काशीनाथ मिश्र**
प्रकाशक : इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

दृक (जनवरी-जून 2005)
प्रधान सम्पादक : **गोविन्दचन्द्र पाण्डेय**
प्रकाशक : दृग्-भारती, इलाहाबाद
मूल्य : 50.00

शब्दशिखर
सम्पादक : **आनन्दप्रकाश त्रिपाठी**
प्रकाशक : साहित्य-संस्कृति संस्थान, फैजाबाद
मूल्य : 50.00

आचार्य चन्द्रबली पांडे (स्मारक ग्रन्थ)
मूल्य : 200.00

1857 का स्वतंत्रता संग्राम
(उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल के सन्दर्भ में)
मूल्य : 130.00

पूर्वी उत्तर प्रदेश के सन्त कवि
मूल्य : 130.00
उपर्युक्त सभी पुस्तकों के लेखक-सम्पादक
डॉ० कन्हैया सिंह

आधुनिक कविता : सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य
डॉ० कन्हैया सिंह तथा डॉ० राजेश सिंह
मूल्य : 130.00

वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

शून्य की कलम से
(तीसरा भाग)
सवाल आपके (अध्यात्म, योग व समाज संबंधी)
जवाब हमारे
एस०के० गुप्ता
शून्य प्रकाशन, 212/सी कटरा अब्दुल गनी, फतेहपुर
मूल्य : 130.00

मेरा पीर (मेरे सद्गुरु)
सत्य, अध्यात्मिक अनुभव संकलन
डॉ० आई०ए० खान
अन्तर्राष्ट्रीय पराविद्या शोध संस्था
कल्याण-421301 (ठाणे)

पागल विद्रोही
अनिरुद्धप्रसाद विमल
समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका (बिहार)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उन दिनों बदहाली में जी रहे थे। ऐसा समय भी आया जब पत्र लिखने के लिए डाक खर्च वहन करना मुश्किल हो गया। उनकी मेज पर बिना टिकट लगे कई लिफाफे इकट्ठा हो गए। एक दिन उनके एक करीबी मित्र ने यह देखा तो वह माजरा समझ गया। उसने उन्हें पाँच रुपये देते हुए कहा—इन पत्रों को शीघ्र भेज दें, लोग इनकी प्रतीक्षा करते होंगे और फिर वक्त ने करवट बदली। भारतेन्दु के पास अच्छा पैसा आने लगा। इन दिनों भी उनका वह मित्र उनके पास आता था। भारतेन्दु रोज पाँच रुपये उसकी जेब में डाल देते। जब कई रोज तक ऐसा होता रहा तो एक दिन मित्र ने उनका हाथ पकड़ लिया। बोला—बहुत हुआ। मैंने आपको एक बार पाँच रुपये दिए थे, पर आप तो बीस बार मुझे लौटा चुके हैं अब मैं न लूँगा। मित्र की बात सुनकर भारतेन्दु बोले—मित्र, तुमने मुझे पाँच रुपये ऐसे वक्त में दिए कि वे मेरा सहारा बने। यदि मैं जीवनभर रोज तुम्हें पाँच रुपये देता रहूँ तो भी उस ऋण से मुक्त नहीं हो पाऊँगा।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **दिसम्बर 2005** **अंक : 12**

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎:Off.(0542)2421472,2413741,2413082(Resi.)2436349,2436498,2311423 ●Fax(0542)2413082